घर जाने की पूरी छुट्टी

मुकेश मालवीय



स्कूल बन्द हुए कितने महीने निकल गए? हमको स्कूल की बहुत याद आती है। पहले किसी कारण से या बीमार हो जाने पर जब हम स्कूल नहीं जा पाते तो अच्छा लगता था कि आज स्कूल नहीं जाना है। लेकिन अब स्कूल ही नहीं जाना है, यह सोचकर बहुत बुरा लगता है। स्कूल में दोस्त होते हैं, टीचर होते हैं और टाइम होता है। टाइम का पता घण्टी से चलता है। हमारे बस्ते में किताब के अलावा भी और चीज़ें होती हैं। किसके बस्ते में क्या है, यह पक्के दोस्त को पता होता है। स्कूल में बहुत-सी बातें हमें अपने दोस्तों से पता चलती हैं। स्कूल में पढ़ाई होती है, इस पढ़ाई में कुछ बच्चे तेज़ होते हैं, कुछ नहीं होते। जो तेज़ नहीं होते, उन्हें टीचर की डाँट पड़ती है। कई बार डाँट क्यों पड़ रही है, पता नहीं चलता। इन सब बातों की हमको बहुत याद आती है। इतने सारे दिन निकल गए, हमारा स्कूल बन्द ही है।

अभी कुछ दिन से मेरे मोहल्ले के दो-तीन दोस्त और मैं रोज़ दिन में कभी-न-कभी एक बार स्कूल तक जाते हैं और उसकी दीवार छूकर वापस आ जाते हैं। मेरी एक दोस्त कहती है कि स्कूल की दीवार छूने से हमको विद्या आएगी। मुझे स्कूल की दीवार छूना बहुत अच्छा लगता है। सुबह से ही मन करने लगता कि दीवार छूने चलें। किसी दिन कोई दोस्त नहीं आता तब मैं अकेले ही जाकर दीवार छूती या दीवार से पीठ लगाकर देर तक खड़ी रहती। खड़े-खड़े मैं सोचती कि दरवाज़ा खोलूँ और स्कूल शुरू करने वाली पहली लम्बी घण्टी बजा



दूँ। एक दिन हम दो-तीन पक्के दोस्त दीवार छूने गए। मैं स्कूल के पीछे की तरफ़ वाली दीवार की तरफ़ गई। दोस्त लोग भी मेरे पीछे आ गए। आज हमने दीवार की खिड़की को छुआ। खिड़की को थोड़ा ज़ोर से छूने से वह थोड़ी-सी खुल गई। उस खिड़की को बन्द करने वाली जो साँकल थी वह थोड़ी बड़ी थी। खिड़की को धकाने से थोड़ी-सी जगह खुल गई थी। हमारा मन हुआ कि कमरे के अन्दर जाना चाहिए। हमने आपस में तय नहीं किया, फिर भी हम एक के बाद एक खिड़की में फँसते हुए अन्दर कमरे में कूद गए। कमरे में फ़र्श पर बहुत धूल जमी थी। हमारे पैरों के निशान फ़र्श पर बन गए। मेरे एक दोस्त ने वहाँ पड़ी झाड़ू उठाई और झाड़ने लगा। हमने मिलकर तीनों कमरे झाड़ दिए। फिर हमने टाटपट्टी को झटकारा। टाटपट्टी बिछाकर हम उसपर बैठ गए। तभी हमें मास्टरजी की कुर्सी दिखी। हमने उसे भी झाड़-पोंछ दिया। इतनी देर तक हमने आपस में कोई बात नहीं की। कुछ देर बाद वापस हम खिड़की से कूदे और खिड़की को ठीक से खींच लिया। अब हम वापस घर जा रहे थे। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे दिनभर स्कूल लगने के बाद घर जाने की पूरी छुट्टी हुई है। यह बात हम तीन-चार दोस्तों के बीच की थी। अब हम रोज़ ही स्कूल में चुपके से जाकर साफ़-सफ़ाई कर रहे थे और थोड़ी देर चुपचाप टाटपट्टी पर बैठकर वापस आ रहे थे। स्कूल को अपनी उपस्थिति देने से हमें पक्का विश्वास आ रहा था कि हमें विद्या आएगी ही।

कुछ दिन में हमें अलग-अलग महसूस हुआ कि हमारे अन्य दोस्तों को विद्या नहीं आएगी तो उनका बड़ा घाटा हो जाएगा। हम तीनों-चारों पक्के दोस्तों के भी अलग-अलग कई दोस्त हैं ये हमें पता नहीं था। यह हमें विद्या आने की वजह से हुआ या किसी और वजह से कि हमने एक दूसरे को बताए बिना छुपाकर रखने वाली यह बात अपने दूसरे दोस्तों को बता दी। अब हम चारों मिलते तो हममें से कोई कहती कि वह आज स्कूल नहीं जा पाएगी। वह दोपहर में या शाम को हमसे छुपकर नए दोस्तों के साथ गुप्त योजना को अंजाम दे देती। एक दिन भरी दोपहर में मैं अपने चार नए दोस्तों के साथ स्कूल के अन्दर चुपचाप टाटपट्टी पर बैठी थी,



तभी चार और दोस्त उसी गुप्त रास्ते से आ गए। हम एक दूसरे को देखकर सकपका गए, पर वे बिना हल्ला किए दूसरे कमरे की टाटपट्टी पर बैठ गए थे।

यह बात अब हमारे गाँव के सब बच्चों को पता है। हम सभी चाहते हैं कि हमको विद्या आए।

हम सबने अब तय किया है कि यह बात टीचर को पता नहीं चलनी चाहिए। टीचर यह बात मान ही नहीं सकते कि स्कूल की दीवार छूने और स्कूल के अन्दर साथ बैठने से भी विद्या आती है।

*लेख के सभी चित्र पावर झंडा गाँव के स्कूल और बच्चों के हैं। सभी चित्र *टीचर जर्नी* फ़िल्म से साभार।

मुकेश मालवीय पिछले दो दशक से भी ज़्यादा समय से स्रोत शिक्षक के रूप में सरकारी और ग़ैर-सरकारी भूमिकाओं में सक्रिय हैं। कक्षा अनुभवों को लेकर सतत लिखते रहते हैं। वर्तमान में अनुसूचित जाति विकास विभाग के शासकीय आवासीय ज्ञानोदय विद्यालय, होशंगाबाद (मध्यप्रदेश) में शिक्षक पद पर कार्यरत हैं।

सम्पर्क : mukeshmalviya15@gmail.com